International Research Fellow Association's

September - 2017

E-ISSN: 2321-4953

IRFA'S UNIRESEARCH

Multidisciplinary International E-Research Journal

Vol.- IX Issue - III

Indexed in DRJI & Indian Citation Index *Double Blind Peer Reviewed Journal*

UGC Approved List No. 63005 *Cosmos Impact Factor - 3.020 [2015]*

हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक – भाग ३

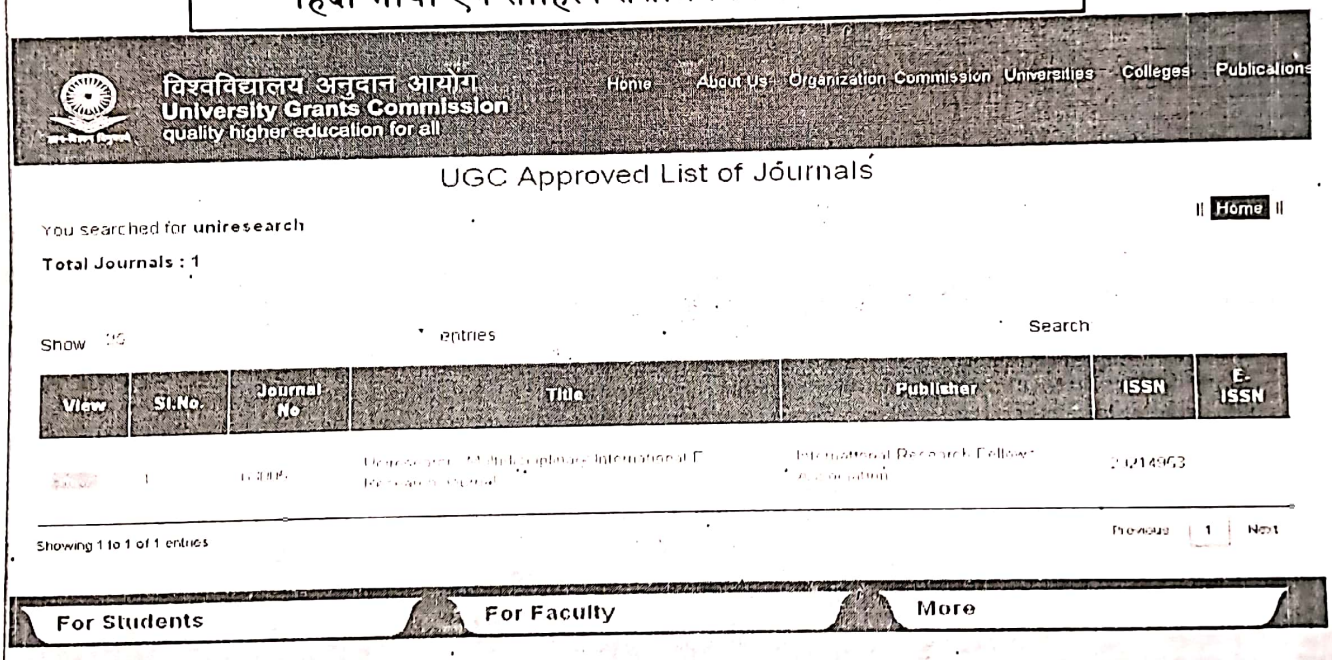

Guest Editor
Dr. Gajanan S. Wankhede
Asst. Professor, Dept. of Hindi,
Baliram Patil Arts, Science &
Commerce College, Kinwat (Nanded)

Chief Editor:
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Asst. Professor, Dept. of Marathi,
M.G.V.'s Arts & Commerce College, Yeola.
Nashik [M. S.] India.

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
@	संपादकीय	- डॉ. गजानन वानखेडे	04
	हिंदी भाषा		
01	हिंदी भाषा का वैश्विक स्वरूप	- डॉ. संजय कांबळे	05
02	विश्व में हिंदी भाषा	- प्रा.एम. डी. नायकू	10
03	वैश्विकीकरण में भाषा का महत्त्व	- राजाराम नायडे	18
04	वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रासंगिकता	- डॉ. करुणा अहिरे	22
05	दूरदर्शन और हिंदी	- डॉ. सुनिता कावळे	24
06	हिंदी में रोजगार के अवसर	- डॉ. महेंद्रसिंग पवार	28
	संत साहित्य		
07	विद्रोही मीरा	- डॉ. शिल्पा जीवरग	31
08	सुफी संतो का साहित्यिक योगदान	- सरला तुपे	34
09	संत नामदेव : एक अध्ययन	- डॉ. शशी माळूंके	37
10	हिंदी साहित्य में मराठी संत नामदेवजी का योगदान	- सुश्री वंदना पाटील	40
11	हिंदी भाषी संतो का साहित्यिक योगदान	- डॉ. रविंद्रनाथ पाटील	44
12	संत ज्ञानेश्वर एवं मीराबाई की भक्ति में सामाजिक समरसता का बोध	- डॉ. सविता चौधरी	48
13	मध्ययुगीन हिंदी साहित्य का आशावादी दृष्टिकोण	- डॉ. रमा दुधमांडे	53
	दलित साहित्य		
14	हिंदी दलित साहित्य में चेतना	- गजानन हरिभाऊ सर्वज्ञ	56
15	माता प्रसाद का नाटक अछूत का बेटा में दलित चिंतन	- डॉ. आनंद बक्षी	58
16	ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य में दलित विमर्श	- प्रा. सूर्यकांत आमलपुरे	62
	समकालीन साहित्य		
17	संवेदनाओं के स्पंदन : 'रिश्तों के एहसास'	- डॉ. रेखा गाजरे	69
18	दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन तुलनात्मक अध्ययन	- डॉ. वनिता पवार	75
19	प्रसाद और तांबे के काव्य में संगीत	- प्रा. अनंत केदारे	83
20	छायावादी काव्य-प्रकृतीपर चेतना का आरोप	- डॉ. शोभा रावत	90
21	हिंदी कथा एवं उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद की रचनाओं की प्रासंगिकता	- डॉ. मनिष टेंभरे	96
22	बालसाहित्य की विशेषताओं के आधार पर 'हमने फुल महकते फुल' कृति का मुल्यांकन	- डॉ. गंगीना जगताप	100
23	समकालीन कथासाहित्य निर्माण में नासिरा शर्मा का योगदान	- हरगोविंद टेंभरे	105

Scanned with OKEN Scanner

'Uniresearch' - International Multidisciplinary E-Research Journal
हिंदी भाषा एवं साहित्य संशोधन विशेषांक भाग - 3
UGC Approved List No. 63005 Impact Factor - 3.020
ISSN 2321-4953
September – 2017
Vol. 9 Issue. 3

बाल साहित्य की विशेषताओं के आधार पर 'हँसते फूल, महकते फूल' कृति का मूल्यांकन

डॉ. संगीता जगताप
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
चिखलदरा.

प्राचीन समय से ही भारत में लोरियाँ और परीं कथाओं के माध्यम से बालसाहित्य विद्यमान था। पाश्चात्य देशों की तरह यह विद्या भारत में कोई नही नहीं है। सैकड़ों वर्षों से यह कथाएँ बालकों के साथ–साथ युवा तथा वृद्धों को मनोरंजन एवं संस्कारों का संवर्द्धन करता आया है। 'पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासतित्सागर, सिंहसन बत्तीसी' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है। 'डॉ. शोभनाथ लालजी' का साहित्य बालसाहित्य के श्रीवृद्धि में अमूल्य योगदान दे रहा है। इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से बच्चों पर ऐसा जादू चलाया कि यह जल्दी ही बालसाहित्य जगत् में बड़े लोकप्रिय हो गए। वे केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करते बल्कि उन्हें आज के नये युग के नवीनतम ज्ञान–विज्ञान और सामाजिक समस्याओं को बड़े मनोरम ढंग से परिचित कराते हैं।

बाल साहित्य एक परिचय:

बालसाहित्य को समग्रता से जानने के लिए हमें उसके कुछ बिन्दुओं पर विचार करना होगा जैसे – बालसाहित्य की परिभाषा एवं स्वरूप क्या है? बाल साहित्य का उद्‌भव और विकास कैसे हुआ? बालसाहित्य को किन–किन युगों में विभाजित किया गया? आदि। हम इन बिन्दुओं पर एक–एक कर प्रकाश डालेंगे।

अ. बालसाहित्य की परिभाषा एवं स्वरूप :–

'विष्णू शर्मा' :

''यन्नवे लग्न: संस्कारो नान्यथा भवेत।
कथालच्छेन बालाना नीतिस्तदिह कथ्यते।''

अर्थात जिस प्रकार किसी नये पात्र या घड़े में कोई संस्कार विद्‌यमान नहीं रहते, उसी प्रकार बच्चों की अवस्था होती है। उन्हें हम जो स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं। वैसा आकार दे सकते हैं। इसलिए उन्हें तो कथा आदि के द्वारा ही नीति के संस्कार आदि बताने चाहिए। 'पंचतंत्र' को विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक मानी जाती है। इसलिए विष्णु शर्माजी की इस परिभाषा की सबसे पहली परिभाषा मानी जा सकती है।

डॉ. रामकुमार वर्मा:

''बालसाहित्य ऐसा हो जो बच्चों में सहज सात्विक उत्सुकता उत्पन्न करे, उनके कौतूहल का पोषण और प्रवर्द्धन करे, जिज्ञासा की तृप्ति करे। बालसाहित्य का विषय ऐसा होना चाहिए जिससे बालक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सच्ची मानवता और विश्व–कल्याण की भावना से अपना जन–जीवन व्यतीत करने का संकल्प ले।''[१]

वड्‌र्सवर्थ :

''बच्चा ईश्वर का अंश लेकर संसार में प्रकट होता है, किंतु सांसारिक प्रभावों से धीरे–धीरे उसका जीवन मलिन और कुत्सित होता जाता है। यहाँ तक कि प्रौढ़ता प्राप्त करते–करते वह पूर्ण रूप से पार्थिव हो जाता है। बालक के लिए सच्ची शिक्षा स्कूलों में नहीं वरन प्रकृति के साहचर्य में ही सम्भव हो सकती है।''[२]

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त दोनों परिभाषा को अगर हम देखें तो गमकुमार वर्मा जी कहते हैं– बालसाहित्य ऐसा हो जो बच्चों के अन्दर ज्ञान के प्रति उत्सुकता और कौतुहल पैदा करे ताकि बचपन की शुष्कता और संकीर्ण विश्व को छोड़कर धीरे–धीरे विश्व के यथार्थ को जान, मानव कल्याण के प्रति समर्पित हो जाए। वही वड्सवर्थ बच्चों को स्कूली पुस्तकों के साथ–साथ प्रकृति के सहवास में ले जाकर शिक्षा देना उचित समझते हैं।

ब. बालसाहित्य का उद्भव, विकास एवं युग विभाजन –

बाल साहित्य का उदय कब हुआ? इस प्रश्न का उत्तर ठीक–ठीक रूप से नहीं दिया जा सकता। इसमें हम केवल अनुमान लगा सकते हैं ना कि किसी ठोस निश्चय पर पहुँच सकते हैं। संस्कृत की पंचतंत्र सिंहासन द्वात्रिंशिका, बेताल, पंचविंशतिका के साथ ही बालसाहित्य का प्रारंभ हुआ होगा हम ऐसा अनुमान लगा सकते हैं या फिर हम यह भी कह सकते हैं कि शायद लोक साहित्य के रूप में बाल साहित्य युगों से निरन्तर बच्चों का मनोरंजन, धर्म, राजनीति और संस्कृति की शिक्षा देता रहा है। लोक जीवन से जुड़ी कहानियाँ एवं गीत वर्षों से सभी वर्गों के लोगों का मनोरंजन करते आ रहे थे। लोकसाहित्य का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। चाहे वह सर्दी के दिनों में अलाव के पास बैठे वृद्धों की कहानियाँ हों या फिर दादी अथवा माँ द्वारा सुनाई जाने वाली लोरियाँ हों या फिर खेत–खलिहानों में गाए जाने वाला गीत हो। लोक साहित्य जन–जीवन से इस तरह जुड़ा हुआ था। जैसे वे उनके जीवन जीने की शैली का आईना हो।

बालसाहित्य के विकास पर हम अगर चर्चा करें तो यह स्पष्ट है कि बालसाहित्य एक अपरिष्कृत रूप में प्राचीन समय से विद्यमान था परंतु आज जिस विकसित रूप को हम देख रहे हैं। वो शुद्ध रूप से आधुनिक युग की देन है। बालसाहित्य के विकास में सबसे बड़ा श्रेय भारतेंदु हरिशचन्द्र जी का है। भारतेंदु जी ने ९ जून १८७८ से 'बाल–बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया। इसमें वे लड़कियों की शिक्षा तथा उनके सुधार के लिए रचनाएँ छापते थे। अत: हिन्दी बालसाहित्य का स्वतंत्र रूप से विकास इसी तिथि से स्वीकार किया जा सकता है। इनके पश्चात महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान महत्वपूर्ण है। बालसाहित्य की विकास यात्रा को विद्वानों ने छ: खण्डों में विभाजित किया–

१. पूर्व भारतेन्दु युग (सन् १८४५ से १८७३ तक)
२. भारतेन्दु युग (सन् १८७५ से १९०० तक)
३. द्विवेदी युग (सन् १९०१ से १९३० तक)
४. आधुनिक युग (सन् १९३१ से १९४६ तक)
५. स्वातंत्र्योतर युग (सन् १९४७ से १९५६ तक)
६. वर्तमान युग (सन् १९५७ से १९६७ तक)

बालसाहित्य की विशेषताओं के आधार पर 'हँसते फूल महकते फूल' का मूल्यांकन:

हँसते फूल महकते फूल इस कृति का मूल्यांकन करने से पूर्व संक्षिप्त में यह जान लेंगे कि वह क्या तथ्य है। जिसके आधार पर बालसाहित्य का मूल्यांकन किया जाए। यह तो निश्चित है कि बालसाहित्य बड़ों के साहित्य से भिन्न है। अत: इसके समीक्षा के तत्व भी भिन्न होने चाहिए। बालसाहित्य का मूल्यांकन इन आधार पर किया जाए कि उस कविता में गेयता है या नहीं, उसमें मनोरंजन का अभाव तो नहीं, यह कविताएँ कितनी ज्ञानवर्ध हैं, इनमें कितना युगबोध है, बाल–मनोविज्ञान को कवि किस हद तक छुपाया है, राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति हो रही है या नहीं, यथार्थ के दर्शन किस तरह कवि उसमें उतार पाया है, आदि। हम इन्हीं के आधार पर डॉ. शोभनाथ लालजी के हँसते फूल महकते फूल कृति का मूल्याकन करेंगे।

Scanned with OKEN Scanner

ज्ञेयता:

ज्ञेयता की दृष्टि से मुख्यत: लालजी के बाल गीतों को अगर हम देखें तो इसके वे मर्मज्ञ कवि है। इनको बाल–गीत में रूचि होने के कारण अपनी संपूर्ण ऊर्जा एवं अनुभव से इन्होंने मधुर बाल–गीतों का सृजन किया इनके द्वारा लिखेगीत कानों को कर्णकटु नहीं लगते। उनमें मधु के जैसी माधुरता एवं लयबद्धता मिलती है। उनकी हँसते फूल महकते फूल का ही एक उदाहरण प्रस्तुत है–

"मानवता के सुमन खिले हों
जिस घर की फुलवारी में,
सुख–सौरभ नित वहाँ बरसता
शिशुओं की किलकारी में।"[१]

एक दूसरा उदाहरण देखिए –

"इन्द्रधनुष सतरंगा देखो
कितना सुन्दर होता है
बाल–वृद्ध यह सबके मन में
बीज खुशी के बोता है।
जब जब मैंने देखा इसको
मचल उठा मन मेरा है।
छवि–वितान का कैसा मनहार
आसमान में घेरा है।।"[२]

मनोरंजन :

साहित्य में मनोरंजन का होना अनिवार्य है। क्योंकि साहित्य में केवल बड़ी–बड़ी ज्ञान की बातें, दर्शन की नैतिकता ही भर दी जाए तो वह साहित्य उबाऊ एवं अरूचि से युक्त प्रतीत होता है। बच्चों को तो मनोरंजन के सभी साधन हमें शोभनाथ जी के बाल–गीतों में प्राप्त होते हैं। उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि उसके माध्यम से वे स्वस्थ संदेश भी देते हैं। उनके कविता में व्यंग के दर्शन किस प्रकार होते हैं–

"मेरी बिल्ली नहीं मानती
कहती दिल्ली जाऊँगी।
चूहे खा–खा ऊब गयी हूँ
वहाँ मलाई खाऊँगी।
कण्डी गले, कमण्डल हाथे
माथे तिलक लगाऊँगी,
चाँदी–सोने के सोफे पर,
आसन वहाँ जमाऊँगी।।"[३]

यहाँ वे बिल्ली के माध्यम से नेता वर्ग पर व्यंग्य करते हैं और उस नेता की इच्छा, दिल्ली जाकर कैसे वैभव भोग एवं भ्रष्टाचार करने की है। उसके दर्शन कराते हैं।

आधुनिक युगबोध :

शोभनाथ लालजी ने अपने बाल–गीतों के माध्यम से आधुनिक समाज का चित्रण बड़ी कुशलता से किया है। उन्होंने विवेक बुद्धि के बल पर समाज की परिस्थिति का अवलोकन कर उसे अपनी गीतों में उतारा है। टॉमी नामक अपनी कविता में वे कहते हैं–

Scanned with OKEN Scanner

"हम विवेक से शून्य जानवर,
भौं–भौं–भौं बस कर लेते हैं।
मालिक के प्रति वफादार हम
कभी नहीं धोखा देते हैं।
मगर आदमी गल काटता
विश्वासों को रौंद–रौंदकर।
यही सालती पीड़ा मुझको,
दिल में मेरे हरदम मथकर।।"[४]

आदर्श एवं यथार्थ के दर्शन:

डॉ. शोभनाथ लालजी ने अपने बाल–गीतों के माध्यम से हमेशा किसी–न–किसी महापुरूष के कार्यों का महान संदेश बच्चों को देने का कार्य किया है। 'अंतरिक्ष से भैया आये' इस कविता के माध्यम से वे बच्चों को 'राकेश शर्मा' के जीवन से परिचित कराते हुए कहते हैं–

"प्रिय भैया रोकश हमारे
अंतरिक्ष से वापस आये।
क्या देखा, क्या सुना वहाँ पर
क्या पाया, भैया ! क्या लाये?
उतना ऊँचा, दूर कभी क्या
हम बच्चे भी जा सकते हैं?
और आपकी तरह सभी से
शाबासी क्या पा सकते हैं?।"[५]

दूसरी ओर समाज की यथार्थ परिस्थिति का वर्णन करते हुए एक भीख माँगने वाले बच्चे को देखकर वह कह उठते हैं–

"एक कटोरा लिए हाथ में
रोज गली में आता है।
"भईया, बहिनी दे जाओ कुछ"
ऊँची हाँक लगाता है।
अम्मा ! कौन अभागा है यह
सबकी खैर मनाता है।
यह भी बस्ता लटकाकर
स्कूल नहीं क्यों जाता है?।।"[६]

बालमनोविज्ञान:

अगर हम डॉ शोभनाथ लालजी को बाल मनोविज्ञान का सिद्धहस्त कवि कहे तो अतिश्योक्ति न होगी। इन्होंने अपने बाल–गीतों में बच्चों की मनोवृत्ति का ऐसा मनोरंजक एवं सुन्दर वर्णन किया है, जिसे देखकर लगता है कि उन्होंने एक बच्चे का कोमल हृदय पाया है। इनके बाल–गीत में बरसात को देख बच्चों का हर्षित होना भी मिलता है, ओस की बूंदों को देख वह मोती का भ्रम करते हैं, बच्चों को गुल्लक के प्रति मोह,

Scanned with OKEN Scanner

रेलगाड़ी का खेल, और बच्चे रूपयों का पेड़ किस तरह लगाना चाहते हैं।, सभी का वर्णन मिलता है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"जुगनू देखो खूब चमकते
उड़ते फिरते हँसते–हँसते।
बरसातों की रातों में ये
भुक–भुक सारी रात दमकते।
उड़ते जैसे ये चिनगारी।
चमक–दमक है कितनी प्यारी।
पेड़ों पर, पत्तों में झिलमिल
खिली मोतियों की है क्यारी।"७

हमने देखा कि बालसाहित्य का उद्भव कैसे हुआ? और उसकी विकास यात्रा क्या है। किन–किन महापुरूषों का योगदान रहा है। बाल साहित्य को अपनी अस्तित्व की रक्षा करने हेतु समय–समय पर संघर्ष करना पड़ा आधुनिक युग में डॉ. शोभनाथ लालजी ने अपने बाल–गीत के माध्यम से बच्चों का मन लुभाकर न केवल उनका मनोरंजन किया। बल्कि उन्हें आज के युग के अनुरूप अनेक प्रवृत्तियों से भी परिचित करवाया। वे उनकी हँसते फूल महकते फूल यह कृति बाल साहित्य के सभी मापदण्डों की कसौटी पर खरी उतरती है। इन्होंने इस कृति के माध्यम से बच्चों को हंसाया भी है, उन्हें नये युग के नये ज्ञान से पचिति भी करवाया, राष्ट्रीयता का विकास उनका उद्देश्य रहा ही है, और सामाजिक समस्याओं का ज्ञान भी करगया। डॉ. शोभनाथ लालजी की हँसते फूल, महकते फूल इस कृति में हमें बाल कल्पना जगत, विज्ञान की शिखा, राष्ट्रभक्ति, बाल–जिज्ञासा, मानवता की सीख, बच्चों पर सुसंस्कार, वात्सल्य प्रेम, प्रकृति प्रेम, व्यंग, त्योहारों का वर्णन आदि सभी विशेषताएं मिलती है। डॉ. शोभनाथ लालजी का उद्देश्य केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं बल्कि यथार्थ के दर्शन कराना भी है।

आधारभूत ग्रंथ सूची:–

१. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन, पृ.सं.-५
२. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन, पृ.सं. ९
३. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन, पृ.सं. १७
४. डॉ. शोभनाथ लाल, हँसते फूल महकते फूल, पृ.सं. ८
५. डॉ. शोभनाथ लाल, हँसते फूल महकते फूल, पृ.सं. २६
६. डॉ. शोभनाथ लाल, हँसते फूल महकते फूल, पृ.सं. १६
७. डॉ. शोभनाथ लाल, हँसते फूल महकते फूल, पृ.सं. ९८

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

१. हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली – ६
२. त्रिसंध्या, डॉ. मधुपन्त, राष्ट्रीय बाल भवन, कोटला रोड, नई दिल्ली – ११० ००२
३. हँसते फूल महकते फूल, डॉ. शोभनाथ लाल साहित्य भूषण कार्यालय, वाराणसी – २२१ ००१